नामांक **Roll No.**

No. of Questions – **30**

S-01-Hindi

No. of Printed Pages – **8**

माध्यमिक परीक्षा, 2018

SECONDARY EXAMINATION, 2018

हिन्दी

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।

(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।

(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।

(4) जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड – 1

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कबीर ने समाज में रहकर समाज का बड़े समीप से निरीक्षण किया । समाज में फैले बाह्याडंबर, भेदभाव, साम्प्रदायिकता आदि का उन्होंने पुष्ट-प्रमाण लेकर ऐसा दृढ़ विरोध किया कि किसी की हिम्मत नहीं हुई जो उनके अकाट्य तर्कों को काट सके । कबीर का व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि उनके सामने टिक सकने की हिम्मत किसी में नहीं थी । इस प्रकार उन्होंने समाज तथा धर्म की बुराइयों को निकाल-निकालकर सबके सामने रखा । ऊँचा नाम रखकर संसार को ठगने वालों के नकली चेहरों को सबको दिखाया, और दीन-दलितों को ऊपर उठाने का उपदेश देकर अपने व्यक्तित्व को सुधार कर सबके सामने एक महान आदर्श प्रस्तुत कर सिद्धांतों का निरूपण किया । कर्म, सेवा, अहिंसा तथा निर्गुण मार्ग का प्रसार किया । कर्म-काण्ड तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया । अपनी साखियों, रमैनियों तथा शब्दों को बोलचाल की भाषा में रचकर सबके सामने एक विशाल ज्ञानमार्ग खोला । इस प्रकार कबीर ने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया और कथनी-करनी की एकता पर बल दिया । वे महान युगदृष्टा, समाज-सुधारक तथा महान कवि थे । उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम के बीच समन्वय की धारा प्रवाहित कर दोनों को ही शीतलता प्रदान की ।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । **1**
2. कबीर के व्यक्तित्व की क्या विशेषता थी ? **1**
3. धर्म के विषय में कबीर का क्या दृष्टिकोण था ? **2**

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

ओ बदनसीब अन्धो ! कमजोर अभागो,
अब तो खोलो नयन नींद से जागो ।
वह अघी ? बाहुबल का जो अपलापी है,
जिसकी ज्वाला बुझ गई, वही पापी है ।
जब तक प्रसन्न यह अनल सगुण हँसते हैं,
है जहाँ खड्ग, सब पुण्य वहीं बसते हैं ।
वीरता जहाँ पर नहीं, पुण्य का क्षय है,
वीरता जहाँ पर नहीं, स्वार्थ की जय है ।
तलवार पुण्य की सखी, धर्म पालक है,
लालच पर अंकुश कठिन, लोभ सालक है ।
असि छोड़, भीरु बन जहाँ धर्म सोता है,
पावक प्रचण्डतम वहाँ प्रकट होता है ।

4. भारतवासियों के प्रति कवि क्यों आक्रोशित है ? **1**

5. पुण्य का क्षय एवं स्वार्थ का उदय कब होता है ? **1**

6. धर्म का पालन किस प्रकार से किया जा सकता है ? **2**

खण्ड – 2

7. दिए गए बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर लगभग **300** शब्दों में निबंध लिखिए : **8**

(क) समाचार–पत्रों का महत्त्व

(i) प्रस्तावना

(ii) समाचार–पत्रों का वर्तमान स्वरूप

(iii) समाचार–पत्रों का दायित्व

(iv) उपसंहार

(ख) राजस्थान में गहराता जल संकट

(i) प्रस्तावना

(ii) जल संकट के कारण

(iii) जल संकट निराकरण के उपाय

(iv) उपसंहार

(ग) उपभोक्तावाद और भारतीय संस्कृति

(i) प्रस्तावना

(ii) पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव

(iii) उपभोक्तावाद, उदारवाद और आर्थिक सुधार

(iv) उपसंहार

(घ) राष्ट्रीय विकास में महिलाओं की भागीदारी

(i) प्रस्तावना व स्वरूप

(ii) राष्ट्र विकास में महिला भागीदारी की आवश्यकता

(iii) कामकाजी महिलाओं की समस्या व उनका समाधान

(iv) उपसंहार

8. आपका नाम ईशान्त है । आप लक्ष्मीनगर, जयपुर के हैं । आपके क्षेत्र में अकसर अनियमित बिजली कटौती की समस्या रहती है । नियमित विद्युत सप्लाई दिलाने हेतु मुख्य अभियंता 'विद्युत', जयपुर को एक शिकायती पत्र लिखिए । **4**

अथवा

स्वयं को रतलाम का पुस्तक विक्रेता दीपक मानते हुए पुस्तक महल, नई दिल्ली को नवीनतम पुस्तक सूची भेजने हेतु एक पत्र लिखिए ।

खण्ड – 3

9. कर्म के आधार पर क्रिया के भेद बताते हुए उनकी परिभाषा लिखिए । **2**

10. "राधा ने मिठाई खाई ।" वाक्य में निहित कारक, काल और वाच्य लिखिए । **3**

11. बहुब्रीहि समास की सोदाहरण परिभाषा लिखिए । **2**

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए : **1 × 2 = 2**

(क) धोबी ने अच्छे कपड़े धोए ।

(ख) सुदामा पक्के कृष्ण के मित्र थे ।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए : **1 × 2 = 2**

(क) बालू से तेल निकालना

(ख) अंधे की लाठी होना

14. 'चट मंगनी पट ब्याह' लोकोक्ति का अर्थ लिखिए । **1**

खण्ड – 4

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **6**

सीत को प्रबल सेनापति कोपि चढ्यो दल,
निबल अनल गयौ सूरि सियराइ कै ।
हिम के समीर, तेई बरसैं विषम तीर,
रही है गरम भौन कोनन मैं जाइ कै ।
धूमनैन बहैं, लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिय सौं लगाई रहैं नैंक सुलगाई कै ।
मानो भीत जानि महा सीत तैं पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै ।

अथवा

विशाल मंदिर की यामिनी में,
जिसे देखना हो दीपमाला ।
तो तारकागण की ज्योति उसका,
पता अनूठा बता रही है ।
प्रभो ! प्रेममय प्रकाश तुम हो,
प्रकृति–पद्मिनी के अंशुमाली ।
असीम उपवन के तुम हो माली
धरा बराबर बता रही है ।
जो तेरी होवे दया दयानिधि,
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ
सभी ये कहते पुकार करके,
यही तो आशा दिला रही है ।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 6

मियाँ नूरे के वकील का अंत उनके प्रतिष्ठानुकूल इससे ज्यादा गौरवमय हुआ । वकील जमीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता । उसकी मर्यादा का विचार तो रखना ही होगा । दीवार में दो खूटियाँ गाड़ी गईं । उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया । पटरे पर कागज का कालीन बिछाया गया । वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर बिराजे । नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया । अदालतों में खस की टट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं । क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो ! कानून की गरमी दिमाग पर चढ़ जाएगी कि नहीं । बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने लगे । मालूम नहीं, पंखे की हवा से, या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोक में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया । फिर बड़े ज़ोर–शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई ।

अथवा

एक उपवन को पाकर भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं लेना और बराबर इस चिन्ता में निमग्न रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला । यह एक ऐसा दोष है जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है । अपने अभाव पर दिन–रात सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्त्तव्य समझने लगता है ।

17. पहली कियां उपाव, दव दुसमण आमय दटै ।

पचंड हुआं विस वाव, रोभा घालै राजिया ।।

उपर्युक्त सोरठे का भावार्थ लिखिए । (उत्तर सीमा **200** शब्द) **6**

अथवा

'लक्ष्मण परशुराम संवाद' पाठानुसार परशुराम की क्रोधाग्नि कैसे शांत हुई ? लिखिए ।

18. 'वह तो बस आहुति देना ही अपना धर्म समझता है ।'

सागर के इस कथन का क्या अभिप्राय है ? (उत्तर सीमा **200** शब्द) **6**

अथवा

लोक संत पीपा ने निर्गुण भक्ति काव्यधारा में किस प्रकार योगदान दिया है ? लिखिए ।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर **40** से **50** शब्दों में दीजिए :

19. गोपियाँ किस लालच से कृष्ण की दासी बन गईं ? **2**

20. 'कल और आज' कविता में नागार्जुन ने ऋतु चक्र का सजीव वर्णन किस प्रकार किया है ? **2**

21. 'कन्यादान' कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए । **2**

22. 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' निबंध की भाषा–शैली पर अपने विचार लिखिए । **2**

23. 'गौरा' की मृत्यु का क्या कारण था ? **2**

24. हामिद ने चिमटा खरीदने का ही निर्णय क्यों किया ? **2**

प्रश्न संख्या **25** से **28** का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

25. 'दामिनी दमक, सुर चाप की चमक, स्याम'
सेनापति की उक्ति पंक्तियों में किस ऋतु का वर्णन है ? **1**

26. 'मातृ-वन्दना' कविता में कवि ने अपने श्रम का श्रेय किसे दिया है ? **1**

27. आध्यात्मिक दृष्टि से कन्याकुमारी का क्या महत्त्व है ? **1**

28. परनिन्दा के विषय में दादू ने क्या कहा है ? **1**

29. निम्न रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय दीजिए : **4**
(i) तुलसीदास
(ii) मुन्शी प्रेमचन्द

30. निम्नाङ्कित यातायात संकेतों का क्या अर्थ है ? **4**

(i) 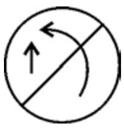

(ii) 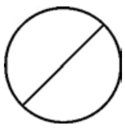

(iii) 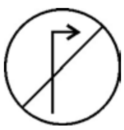

(iv) 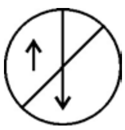

राजस्थान बोर्ड परीक्षा प्रश्न–पत्र (हल सहित)
माध्यमिक परीक्षा, 2018
हिन्दी

(समयः $3\frac{1}{4}$ घण्टे) (पूर्णांक : 80)

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आंतरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

भाग–अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कबीर ने समाज में रहकर समाज का बड़े समीप से निरीक्षण किया। समाज में फैले बाह्याडंबर, भेदभाव, साम्प्रदायिकता आदि का उन्होंने पुष्ट–प्रमाण लेकर ऐसा दृढ़ विरोध किया कि किसी की हिम्मत नहीं हुई जो उनके अकाट्य तर्कों को काट सके। कबीर का व्यक्तित्व इतना ऊँचा था कि उनके सामने टिक सकने की हिम्मत किसी में नहीं थी। इस प्रकार उन्होंने समाज तथा धर्म की बुराइयों को निकाल–निकालकर सबके सामने रखा। ऊँचा नाम रखकर संसार को ठगने वालों के नकली चेहरों को सबको दिखाया और दीन–दलितों को ऊपर उठाने का उपदेश देकर अपने व्यक्तित्व को सुधार कर सब के सामने एक महान आदर्श प्रस्तुत कर सिद्धांतों का निरूपण किया। कर्म, सेवा, अहिंसा तथा निर्गुण मार्ग का प्रसार किया। कर्म–काण्ड तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया। अपनी साखियों, रमैनियों तथा शब्दों को बोलचाल की भाषा में रचकर सबके सामने एक विशाल ज्ञानमार्ग खोला। इस प्रकार कबीर ने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया और कथनी–करनी की एकता पर बल दिया। वे महान युगदृष्टा, समाज–सुधारक तथा महान कवि थे। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम के बीच समन्वय की धारा प्रवाहित कर दोनों को ही शीतलता प्रदान की।

1. उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। **(1)**

उत्तर :

गद्यांश का उचित शीर्षक–कबीर–समाज सुधारक।

2. कबीर के व्यक्तित्व की क्या विशेषता थी? **(1)**

उत्तर :

कबीर के व्यक्तित्व कि यह विशेषता थी कि उनका व्यक्तित्व इतना उच्च था कि उनके तर्कों और वितर्कों का सामना कर पाने की किसी में हिम्मत नहीं थी।

3. धर्म के विषय में कबीर का क्या दृष्टिकोण था? **(2)**

उत्तर :

धर्म के बारे में कबीर का दृष्टिकोण विकासशील और समन्वयवादी था। उन्होंने अलग–अलग धर्मों में फैले पाखंड, ऊँच–नीच तथा जाति–पाति, सांप्रदायिकता का विरोध किया। अहिंसा, कार्य, सेवा तथा गुणरहित रास्ते को फैलाया।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः

ओ बदनसीब अन्धो! कमजोर अभागो,
अब तो खोलो नयन नींद से जागो।
वह अघी? बाहुबल का जो अपलापी है,
जिसकी ज्वाला बुझ गई, वही पापी है।
जब तक प्रसन्न यह अनल सगुण हँसते हैं,
है जहाँ खड्ग, सब पुण्य वहीं बसते हैं।
वीरता जहाँ पर नहीं, पुण्य का क्षय है,
वीरता जहाँ पर नहीं, स्वार्थ की जय है।
तलवार पुण्य की सखी, धर्म पालक है,
लालच पर अंकुश कठिन, लोभ सालक है।
असि छोड़, भीरु बन जहाँ धर्म सोता है,
पावक प्रचंडतम वहाँ प्रकट होता है।

4. भारतवासियों के प्रति कवि क्यों आक्रोशित हैं? **(1)**

उत्तर :

कवि भारतवासियों में लिप्त लोभ की भावना और कायरता के प्रति आक्रोशित हैं।

5. पुण्य का क्षय एवं स्वार्थ का उदय कब होता है? **(1)**

उत्तर :

जहाँ पर वीरता और नीडर का भाव नहीं होता है और कायरता का जन्म हो जाता है, वहाँ पुण्यों का क्षय होने लगता है। लोभ–लालच प्रकट हो जाता है, वहाँ स्वार्थ की भावना उदय हो जाती है।

6. धर्म का पालन किस प्रकार से किया जा सकता है? **(2)**

उत्तर :

धर्म का पालन वीरता, शूरता और साहस जैसे गुणों के द्वारा होता है। कमजोर और डरपोक मनुष्य भगवान नहीं हो सकता है। लोभ, स्वार्थता, कायरता और कमजोरी त्यागकर ही धर्म का पालन किया जा सकता है।

भाग–ब

7. दिए गए बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए : **(8)**

1. **समाचार–पत्रों का महत्व–**
   (a) प्रस्तावना
   (b) समाचार–पत्रों का वर्तमान स्वरूप
   (c) समाचार–पत्रों का दायित्व
   (d) उपसंहार
2. **राजस्थान में गहराता जल संकट–**
   (a) प्रस्तावना
   (b) जल संकट के कारण
   (c) जल संकट निराकरण के उपाय
   (d) उपसंहार
3. **उपभोक्तावाद और भारतीय संस्कृति–**
   (a) प्रस्तावना
   (b) पाश्चातय संस्कृति का दुष्प्रभाव
   (c) उपभोक्तावाद, उदारवाद और आर्थिक सुधार
   (d) उपसंहार
4. **राष्ट्रीय विकास में महिलाओं की भागीदारी–**
   (a) प्रस्तावना व स्वरूप
   (b) राष्ट्र विकास में महिला भागीदारी की आवश्यकता
   (c) कामकाजी महिलाओं की समस्या व उनका समाधान
   (d) उपसंहार

उत्तर :

समाचार–पत्रों का महत्व

1. **प्रस्तावना–** आज समाचार–पत्र जीवन का एक आवश्यक अंग बन गया है। समाचार–पत्र की शक्ति असीम है। प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में तो इसका और भी अधिक महत्व है। देशोन्नति एवं अवनति समाचार–पत्रों पर ही निर्भर करती है। भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में समाचार–पत्रों एवं उनके संपादकों का विशेष योगदान रहा है। इसको किसी ने जनता की सदा चलती रहने वाली पार्लियामेंट कहा है।
2. **समाचार–पत्रों का वर्तमान स्वरूप–** अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में समाचार–पत्र आज एक अतिमहत्वपूर्ण अंग बन चुका है। विश्व की राजनीति को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने वाले समाचार–पत्र ही हैं। निष्पक्ष समाचार एवं टिप्पणी से समाचार–पत्रों का महत्व बढ़ता है। लोग उन पर विश्वास करते हैं।
   प्रजातंत्र शासन में तो समाचार–पत्रों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होती है, ये प्रजातंत्र के प्रहरी होते हैं। शासनारूढ़ राजनीतिक दल को सचेत करना, उसकी गलत नीतियों की आलोचना करना, जनता को जागरूक बनाना आदि इनके कार्य हैं। समाचार–पत्र जनता के मत और आकांक्षा को प्रकट करते हैं, देश की प्रगति की सच्ची तस्वीर जनता के सामने प्रस्तुत करते हैं। यही कारण है कि समाचार–पत्रों को विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के अतिरिक्त प्रजातंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है।
   समाचार–पत्र पर शब्द आज पूरी तरह लाक्षणिक हो गया है, अब समाचार–पत्र केवल समाचारों से पूर्ण पत्र नहीं रह गया है, बल्कि यह साहित्य, राजनीति, धर्म, विज्ञान आदि विविध विधाओं को भी अपनी कलेवर सीमा में सँभाले चल रहा है। किन्तु वर्तमान स्वरूप में आते–आते समाचार–पत्र ने एक लम्बी यात्रा तय की है। आज ज्योतिष, अंध विश्वास, भविष्यवाणी, भाग्यफल सभी कुछ समाचार–पत्रों का अंग बनाए गए हैं।
3. **समाचार पत्रों का दायित्व–** आजकल समाचार–पत्र जनता के विचारों के प्रसार का सबसे बड़ा साधन है। ये धनिकों की वस्तु न होकर जनता की वाणी है। ये शोषितों और दलितों की पुकार है। आज ये जनता के माता–पिता, स्कूल–कॉलेज, शिक्षक, थियेटर, आदर्श और उत्प्रेरक हैं। परामर्शदाता और साथी सब कुछ है। ये सच्चे अर्थों में जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः समाचार–पत्र निराश्रितों का सबसे बड़ा आश्रय है। दो अढ़ाई रुपए के समाचार–पत्र में क्या नहीं होता? कार्टून, देश भर के महत्वपूर्ण और मनोरंजक समाचार, संपादकीय लेख, विद्वानों के लेख, नेताओं के भाषणों की रिपोर्ट, व्यापार एवं मेलों की सूचनाएँ और विशेषज्ञ संस्करणों में स्त्रियों और बच्चों के उपयोग की सामग्री, पुस्तकों की आलोचना, नाटक, कहानी, धारावाहिक, उपन्यास, हास्य व्यंग्यात्मक लेख आदि विशेष सामग्री रहती हैं। समाचार–पत्र सामाजिक कुरीतियाँ दूर करने में बड़े सहायक हैं। समाचार–पत्रों की खबरें बड़ों–बड़ों के मिजाज ठीक कर देती है। सरकारी नीति के प्रकाश और उसके खंडन का समाचार–पत्र सुंदर साधन है। इनके द्वारा शासन में सुधार भी किया जा सकता है। समाचार–पत्र व्यापार का सर्वसुलभ साधन है। विक्रय करने वाले और क्रय–करने वाले दोनों ही समाचार–पत्रों को अपनी सूचना का माध्यम बनाते हैं। इससे जितना ही लाभ साधारण जनता को होता है, उतना ही व्यापारियों को। बाजार का उतार–चढ़ाव इन्हीं समाचार–पत्रों की सूचनाओं पर चलता है। व्यापारी बड़ी उत्कंठा से समाचार–पत्रों को पढ़ते हैं।
4. **उपसंहार–** अंत में यह कहना आवश्यक है कि समाचार–पत्र का बड़ा महत्व है, पर उसका उत्तरदायित्व भी है कि उसके समाचार निष्पक्ष हों, किसी विशेष पार्टी या पूँजीपति के स्वार्थ का साधन न बनें। आजकल के भारतीय समाचार–पत्रों में यह बड़ी कमी है। जनता की वाणी का ऐसा दुरुपयोग नहीं होना चाहिए, फिर भी यह निर्विवाद है कि भारत में पत्रकारिता का भविष्य उज्जवल है और विशेषकर हिंदी समाचार–पत्रों का। पत्र संपादक को अपना दायित्व भली प्रकार समझना चाहिए।

राजस्थान में गहराता जल संकट

1. **प्रस्तावना–** जल ही जीवन है। पानी के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। वर्तमान समय में सभी महानगर जलसंकट से जूझ रहे हैं। पानी के परंपरागत स्त्रोत् हैं–नदियाँ, तालाब, झरने, वर्षा। नदियों में जल का प्रवाह तभी होता है जब पहाड़ों पर बर्फ पर्याप्त मात्रा में पड़ती है और वह सूर्य की गर्मी से पिघलकर हिमखंडों (ग्लेशियरों) के रूप में नदी में जल का संचार करती है।
2. **जल संकट के कारण–** यह देखा जा रहा है कि नदियों में जल का स्तर निरंतर घटता जा रहा है अतः पेयजल की उपलब्धता कम होती जा रही है। तालाबों की संख्या भी निरंतर घटती जा रही है। पुराने तालाब खराब अवस्था में हैं तथा नए तालाब नहीं बनाए जा रहे हैं। वर्षा का होना भी कुछ–कुछ अनिश्चित–सा होता जा रहा है। यही कारण है कि जल की मात्रा निरंतर कम होती जा रही है।
3. **जल संकट निराकरण के उपाय–** वर्षा का काफी जल बर्बाद हो

जाता है। उसका संरक्षण किया जाना चाहिए। अब लोग छतों पर तथा जमीन पर कुछ क्षेत्र घेरकर उसमें वर्षा जल का संचय करते हैं। यही जल बाद में शुद्ध करके पेयजल के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। इससे जल की उपलब्धता बढ़ेगी। इस उपाय के अलावा हमें जल को बचाकर रखने की आदत डालनी होगी। हम पेयजल की काफी बर्बादी करते हैं। शौचालयों में पेयजल को प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। पेड़–पौधों को सींखने, मोटरगाड़ियों को धोने, कपड़ों की धुलाई आदि कामों में भी काफी पेयजल की बर्बादी करते हैं। इन कामों में धरती के कच्चे जल का प्रयोग किया जा सकता है।

4. **उपसंहार–** पानी के स्त्रोतों पर भी हमारी दृष्टि बनी रहनी चाहिए। उनकों ठीक–ठाक अवस्था में रखना जरूरी है। इनकी साफ–सफाई करते रहना चाहिए। नदियों के जल को प्रदूषण से बचाना चाहिए। शहरों में गंदे नालों और कारखानों के अवशेषों को नदियों में डाला जा रहा है। इससे जल प्रदूषित हो जाता है। आज गंगा नदी तक पवित्र नहीं रह गई है। इस स्थिति से जल प्रदूषण उत्पन्न होता है और पेयजल का संकट उत्पन्न हो जाता है।

   अब समय आ गया है कि हम जल संरक्षण के उपायों पर गंभीरतापूर्वक विचार करें और इन्हें अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाएँ।

उपभोक्तावाद और भारतीय संस्कृति

1. **प्रस्तावना–** उपभोक्तावाद एक ऐसी आर्थिक प्रक्रिया है जिसका सीधा अर्थ है समाज के भीतर व्याप्त प्रत्येक तत्व उपभोग करने योग्य है। बस उसे उचित तरीके से एक जरूरी वस्तु के रूप में स्थापित करने की आवश्यकता हैं। उसको खरीदने और बेचने वाले लोग स्वतः ही मिल जाएंगें, क्योंकि मानव मस्तिष्क चीजों को बहुत जल्दी ग्रहण कर लेता है।
2. **पाश्चात्य संस्कृति का दुष्प्रभाव–** पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय जनमानस को विशेष रूप से युवाओं को अपनी गिरफ्त में ले लिया हैं। बाजारवाद की बाढ़ में नैतिक मूल्य बह गए है। इंसानियत लुप्त–सी होने लगी है। अमीर बनने की लालसा में खाद्य व पेय पदार्थों में मिलावट, कालाबाजारी, घूसखोरी, अपहरण जैसे अपराधों में बढ़ोत्तरी हो रही है। भारतीय संस्कृति के लोग, पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे है वहाँ के रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा आदि की नकल करके उसी रंग–रूप में ढलते जा रहे है जो कि भारतीय संस्कृति के लिए विनाशक तत्व है।
3. **उपभोक्तावाद, उदारवाद और आर्थिक सुधार–** 1991 में भारतीय सरकार ने महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार प्रस्तुत किए जो इस दृष्टि से वृहद् प्रयास थे कि इनमें विदेशी व्यापार, उदारीकरण, कर सुधार और विदेशी निवेश के प्रति आग्रह शामिल था। इन उपायों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को गति देने में मदद की। इससे भारतीय उपभोक्तावाद, उदारवाद तथा आर्थिक नीति में विभिन्न सुधार हुए।
4. **उपसंहार–** भारतीय संस्कृति में इतने महान् तत्व होते हुए भी आज स्थिति विपरीत है। आज अध्यात्म की जगह प्रखर भोगवाद का बोलबाला है। अध्यात्म के केन्द्र सुविधा के अड्डे बन गए हैं। समन्वय का स्थान अब अलगाववाद लेता जा रहा है। आरक्षण और चुनाव के आधार पर जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है। सब धर्म, मत, संप्रदाय अपनी अलग पहचान बनाने को आतुर हो रहे हैं। वर्ण–व्यवस्था ने घृणित रूप धारण कर लिया है। चतुर्वर्गों में से **धर्म** की कोई परवाह नहीं करता। सभी **अर्थ** और **काम** की नंगी यात्रा कर रहे हैं। यह सब पाश्चात्य संस्कृति का कुप्रभाव है। आज संस्कृति के मापदंड केवल शब्दों तक ही रह गए हैं, व्यवहार में कहीं नहीं दीखते। यदि भारत को पुनः उन्नति के शिखर पर आसीन होना है तो उसे अपने असली स्वरूप को पहचानना होगा। वरना उसकी हस्ती भी जल्दी ही धूलधूसरित हो जाएगी।

राष्ट्रीय विकास में महिलाओं की भागीदारी

1. **प्रस्तावना व स्वरूप– नर से भारी नारी, एक नहीं दो–दो मात्राएँ**, यह कह कर कविवर **दिनकर** ने नारी के महत्व को स्पष्ट किया है। सचमुच नारी पुरुष से अधिक महत्वपूर्ण है। हमारी संस्कृति में जो कुछ भी सुंदर है, शुभ है, कल्याणकारी है, मंगलकारी है, उसकी कल्पना नारी रूप में ही की गई है। सौंदर्य कामदेव और रति के मिलन में ही पूर्णतया प्राप्त करता है। धन–धान्य और समृद्धि की देवी लक्ष्मी है। विद्या एवं कलाओं की देवी वीणावादिनी, हंसवाहिनी सरस्वती जी हैं। स्वयं भगवान शिव की शक्ति का आधार शक्तिरूपिणी दुर्गा या पार्वती हैं। राम से पहले सीता को याद करना और कृष्ण से पहले राधा का नाम लिया जाना इस बात का सूचक है कि हमारे यहाँ नारी के महत्व को बहुत प्राचीनकाल से ही पहचान लिय गया था। भारतीय समाज में नारी सदा से पूज्य नहीं है। कोई भी धार्मिक कृत्य नारी के बिना अधूरा माना जाता था।
2. **राष्ट्र विकास में महिला भागीदारी की आवश्यकता–** वर्तमान काल की नारी जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रही है। अब वह **अबला** नहीं रही। आज स्कूल, कॉलेज, सेना, पुलिस, चिकित्सा, वकालत, व्यापार आदि सभी क्षेत्रों में उसने नाम कमाया है। वह पुरुषों की तुलना में अधिक योग्य और कार्यकुशल कर्मचारी सिद्ध हुई है। सबसे सुखद बात तो यह है कि जीवन के विस्तृत क्षेत्र में आने से नारी का रूप और अधिक संतुलित और गरिमाशाली बना है। उसमें दया, ममता, करुणा, वात्सल्य आदि कोमल गुण पहले की भाँति विद्यमान हैं और नई रोशनी के कारण विवेक, स्वाभिमान, आत्मसम्मान आदि गुणों का और समावेश हो गया है। राष्ट्र के विकास में महिलाओं की भागीदारी, पुरुषों के समान ही आवश्यक तत्व है।
3. **कामकाजी महिलाओं की समस्या व उनका समाधान–** नौकरी पेशा नारी के जीवन में समस्याओं का अंबार है। उसे पहले की तरह ही चूल्हा–चौका भी सँभालना है और नौकरी की जिम्मेदारी भी ढोनी है। उस पर कार्य का बहुत दबाव है। बालकों और पति के प्रति भी जवाबदेह और ऑफिस में कार्य के प्रति भी जवाबदेह। दूसरे घर से बाहर निकलने पर असुरक्षा बोध भी उसे सताता है। यदा–कदा उसे शारीरिक शोषण का भी शिकार होना पड़ता है। उसका परिवार अपने को उपेक्षित अनुभव करने लगता है। वह बच्चों और पति को वांछित समय नहीं दे पाती। अतः परिवार में तनाव बढ़ता है। अतः पुरुष व नारी मिलकर कार्य करेंगे तब ही इस समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।
4. **उपसंहार–** मध्ययुग में भारतीय नारी की प्रतिष्ठा घटी थी परन्तु स्वाधीनता संग्राम में नारियों के महत्वपूर्ण योगदान के कारण उनकी प्रतिष्ठा पुनः बढ़ी है। आज भारतीय समाज में नारी को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों में वे पुरुषों

के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, सती-प्रथा तथ विधवाओं के प्रति बुरा बर्ताव आज भी प्रचलित है। नववधुओं को जलाने की घटनाएँ आज भी हमारे समाज में घटित होती हैं परन्तु समग्र रूप में देखें तो नारी की दशा सुधरी है और उनका देश की प्रगति में योगदान बढ़ा है।

8. आपका नाम ईशान्त है। आप लक्ष्मीनगर, जयपुर के हैं। आपके क्षेत्र में अकसर अनियमित बिजली कटौती की समस्या रहती है। नियमित विद्युत सप्लाई दिलाने हेतु मुख्य अभियंता **विद्युत** जयपुर को एक शिकायती पत्र लिखिए। **(4)**

उत्तर :

प्रेषक
ईशान्त
लक्ष्मीनगर, जयपुर
दिनांक 5 जुलाई, 2018

सेवा में,
मुख्य अभियंता
विद्युत वितरण निगम
जयपुर (राज.)
विषय– विद्युत सप्लाई की अनियमितता के विषय में।
महोदय,
मैं इस पत्र के द्वारा लक्ष्मीनगर की विद्युत सप्लाई की अनियमितता की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। विद्युत वितरण बोर्ड की तरफ से अनियमित बिजली की कटौती की जा रही है। कटौती का कोई समय निश्चित नहीं है। जब चाहे बिजली गुल हो जाती है। बिजली न होने पर आम लोगों का जीवन थम-सा गया है। बिजली न होने पर पानी की आपूर्ति बंद हो जाती है। आवश्यक कार्य भी नहीं होते हैं।
अतः आपसे निवेदन है कि आप जनता के दुःखों और परेशानियों को देखते हुए नियमित विद्युत सप्लाई दिलाने के संबंध में तुरन्त कार्यवाही करें।
धन्यवाद

भवदीय
ईशान्त
लक्ष्मीनगर, जयपुर

अथवा

8. स्वयं को रतलाम का पुस्तक विक्रेता दीपक मानते हुए पुस्तक महल, नई दिल्ली को नवीनतम पुस्तक सूची भेजने हेतु एक पत्र लिखिए।

उत्तर :

प्रेषक
दीपक बुक डिपो
कृष्णा नगर, रतलाम
दिनांक 7 अप्रेल, 20__

सेवा में,
प्रबंधक महोदय
पुस्तक महल, नई सड़क,
नई दिल्ली
महोदय,

विषयः– पुस्तक महल, नई दिल्ली को नवीनतम पुस्तक सूची भेजने हेतु।
मैंने कुछ समय पहले ही दुकान प्रारम्भ की है। मैंने आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के श्रेष्ठ स्तर और प्रसिद्धि के बारे में सुना है। मैं अपनी दुकान के द्वारा अपने शहरवासियों को आपकी पुस्तकों से लाभान्वित करना चाहता हूँ। कृपया आपके द्वारा जो पुस्तकें प्रकाशित हैं, उनका सूची-पत्र और दुकानदार को दिए जाने वाले कमीशन का विवरण जल्दी भेजने की कृपा करें।
धन्यवाद

भवदीय
दीपक

भाग-स

9. कर्म के आधार पर क्रिया के भेद बताते हुए उनकी परिभाषा लिखिए। **(2)**

उत्तर :
कर्म के आधार पर क्रिया के दो प्रकार होते हैं-

1. **अकर्मक क्रिया –** जिस क्रिया का फल कर्म पर नहीं, कर्ता पर पड़ता है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। दूसरे शब्दों में अकर्मक क्रिया में किसी कर्म की आवश्यकता नहीं होती। जैसे- मोर नाचता है, मोहन हँसता है।
2. **सकर्मक क्रिया –** जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है तथा जिसके प्रयोग में कर्म की अनिवार्यता बनी रहती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- राम ने बैर खाये, अनुराग ने फल खरीदे।

10. राधा ने मिठाई खाई। वाक्य में निहित कारक, काल और वाच्य लिखिए। **(3)**

उत्तर :
राधा ने मिठाई खाई वाक्य में कारक-कर्ता, काल-भूतकाल तथा वाच्य-कर्मवाच्य है।

11. बहुव्रीहि समास की सोदाहरण परिभाषा लिखिए। **(2)**

उत्तर :
जहाँ समस्त पद में आये हुए दोनों पद गौण होते हैं तथा ये दोनों मिलकर किसी तीसरे पद के विषय में संकेत करते हैं तथा यही तीसरा पद प्रधान होता है। जैसे- चक्रधर = चक्र धारण करने वाला (विष्णु)।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए : $(1 \times 2 = 2)$

1. धोबी ने अच्छे कपड़े धोए
2. सुदामा पक्के कृष्ण के मित्र थे।

उत्तर :
शुद्ध वाक्य

1. धोबी ने कपड़े अच्छे धोए।
2. सुदामा कृष्ण के पक्के मित्र थे।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए : $(1 \times 2 = 2)$

1. बालू से तेल निकालना

2. अंधे की लाठी होना।

उत्तर :

1. **बालू से तेल निकालना** – नामुमकिन या व्यर्थ कोशिश करना।
2. **अंधे की लाठी होना** – एकमात्र सहारा होना।

14. **चट मंगनी पट ब्याह** लोकोक्ति का अर्थ लिखिए। **(1)**

उत्तर :

चट मंगनी पट ब्याह – अच्छे काम को तुरंत करना।

भाग–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(6)**

सीत कौ प्रबल सेनापति कोपि चढ़यौ दल,
निबल अनल गयौ सूरि सियराइ कै।
हिम के समीर, तेई बरसैं विषम तीर,
रही है गरम भौन कोनन मैं जाइ कै।
धूम नैन बहैं, लोग आगि पर गिरे रहैं,
हिय सौं लगाइ रहैं नैंक सुलगाइ कै।
मानौ भीत जानि महा सीत तैं पसारि पानि,
छतियाँ की छाँह राख्यौ पाउक छिपाइ कै।

उत्तर :

संदर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत छंद कवि सेनापति के कवित्तों से पाठ्यपुस्तक में **ऋतुवर्णन** शीर्षक के अंतर्गत लिया गया है। इस छंद के माध्यम से कवि ने शीत को एक आक्रमणकारी के रूप में बताया है।

व्याख्या :

कवि सेनापति कहते हैं कि शीत ऋतु की ताकतवर सेना ने सांसारिक जीवन पर क्रोधित होकर चढ़ाई कर दी है। इसकी वजह से अग्नि शक्तिरहित हो गई है और सूरज ठण्डा पड़ गया है। इन दोनों का प्रभाव लोगों की शीत से सुरक्षा नहीं कर पा रहा है। बर्फ के जैसी ठण्डी हवा ही शीत की सेना द्वारा बरसाए जा रहे खतरनाक तीरों के समान है। शीत के डर से बेचारी गर्मी घरों के कोनों में जा छूपी है। आग तापने वाले लोगों की आँखों से धुएँ के वजह से पानी बह रहा है। लोग ठण्ड से बचने के लिए अग्नि पर झुके जा रहे हैं। आग के जरा–सा जलते ही लोग उसे तापने लगते हैं। इन दृश्यों को देखकर ऐसा लग रहा है मानो अग्नि को शीत से डरा हुआ जानकर लोगों ने उसे भंयकर ठण्ड से बचाने के लिए हाथ फैलाकर अपने छातियों की छाया में छूपा लिया है।

नोट : विशेष

1. साहित्यिक और समर्थ ब्रज भाषा का उपयोग हुआ है।
2. शैली शब्द चित्रात्मक है। कवि ने सटीक शब्दों का चुनाव करके शीतकालीन दृश्यों को साकार कर दिया है।
3. भयानक रस की झलक है।
4. **सूरि सियराइ, बरसैं विषम, पसारि पानि**, आदि में अनुप्रास अलंकार है। पूरे छंद में सांगरूपक का निर्वाह किया गया है। **मानो भीत जानि.......... छिपाई कै** में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अथवा

15. विशाल मंदिर की यामिनी में,
जिसे देखना हो दीपमाला।
तो तारकागण की ज्योति उसका,
पता अनूठा बता रही है।
प्रभो! प्रेममय प्रकाश तुम हो,
प्रकृति–पद्मिनी के अंशुमाली।
असीम उपवन के तुम हो माली
धरा बराबर बता रही है।
जो तेरी होवे दया दयानिधि,
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ
सभी ये कहते पुकार करके,
यही तो आशा दिला रही है।

उत्तर :

संदर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक में संकलित कवि जयशंकर प्रसाद की रचना **प्रभो** से लिया गया है। पद्यांश में कवि परमप्रभु के अनौखे व्यक्तित्व की झलक नूतन कल्पनाओं के द्वारा प्रस्तुत कर रहा है।

व्याख्या :

कवि कहता है– क्या तुम अंज्ञात परमप्रभु के रात्रि में दीपमालाओं से चमकते–दमकते विशाल मंदिर की झलक पाना चाहते हो? तो फिर उस विशाल नीले आकाश में झिलमिलाते, अनगिनत तारों को निहारो। वह ईश्वर कैसा अद्भुत और प्रकाशमय है, इसे ऐसी विशाल कल्पना से ही कुछ–कुछ समझा जा सकता है। हे मेरे प्रभु! आप ऐसे प्रकाश हैं जो सारे संसार पर लगातार सहज प्रेम की वर्षा करते हैं। यह सारी प्रकृतिरूपी कमलिनी को खिलाने वाले परम प्रसन्नतामय बनाने वाले हे! ईश्वर आप ही हैं। इस सृष्टिरूप अनंत वगीचे के रक्षक आप ही हैं। इस सच को यह सारी पृथ्वी लगातार बताती आ रही है। पृथ्वी का प्रकृतिरूपी सौन्दर्य, खुशियाँ देने वाला स्वरूप और इसके प्राणियों में स्थित परस्पर प्रेम का भाव आपकी मेहरबानी का प्रत्यक्ष प्रमाण है। कवि कहते हैं– हे दया करने वाले परमप्रभु! सारा जगत हमेशा से पुकार–पुकार कर कहता आ रहा है कि यदि आपकी प्राणी पर दया दृष्टि हो जाये तो उसके मन की सारी कामनाएँ पूरी हो जाती हैं। हे स्वामी इसी को देखकर तो मुझ जैसे निरासों को भी उम्मीद हो रही है कि आप मेरी इच्छाओं को भी पूरा करेंगे।

नोट : विशेष

1. कवि ने बड़ी सहज–सरल भाषा में अपनी इच्छाओं को व्यक्त किया है।
2. कवि का ईश्वर की दयाभावना पर पूरा विश्वास है। यह काव्यांश से व्यक्त पढ़कर पता चल रहा है।
3. **दया दयानिधि** में अनुप्रास अलंकार है।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(6)**

मियाँ नूरे के वकील का अंत उनके प्रतिष्ठानुकूल इससे ज्यादा गौरवमय हुआ। वकील जमीन पर या ताक पर तो नहीं बैठ सकता। उसकी मर्यादा का विचार तो रखना ही होगा। दीवार में दो खूटियाँ गाड़ी गईं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा गया। पटरे पर कागज का कालीन बिछाया गया। वकील साहब राजा भोज की भाँति सिंहासन पर बिराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। अदालतों में खस की टाट्टियाँ और बिजली के पंखे रहते हैं। क्या यहाँ मामूली पंखा भी न हो! कानून की गरमी दिमाग पर चढ़ जाएगी कि नहीं। बाँस का पंखा आया और नूरे हवा करने

लगे। मालूम नहीं, पंखे की हवा से, या पंखे की चोट से वकील साहब स्वर्गलोक से मृत्युलोग में आ रहे और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया। फिर बड़े जोर–शोर से मातम हुआ और वकील साहब की अस्थि घूरे पर डाल दी गई।

उत्तर :

संदर्भ एवं प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश पाठ्य पुस्तक में वर्णित **ईदगाह** शीर्षक कहानी से लिया गया है। इसके लेखक लोकप्रिय कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द हैं। ईदगाह से सारे बच्चे खिलौने लेकर लौट आते हैं। बालक नूरेमियाँ के खिलौने का अपने घर पर जो हुआ, प्रस्तुत गद्यांश में वर्णन किया गया है।

व्याख्या :

मेले से बालक नूरेमियाँ को वकील वाला खिलौना पसंद आया। उसे लेकर खुश होता हुआ वह घर पहुँचा। नूरे ने वकील के सम्मान का ध्यान रखते हुए उसके बैठने के लिए ऊँचे आसन का इंतजाम किया, क्योंकि वकील को किसी ताक में तो नहीं रखा जा सकता था। इसलिए दीवार में दो खूँटियाँ गाड़ी गईं और खूँटियों के ऊपर एक लकड़ी का पट्टा रख दिया है। पट्टे के ऊपर कालीन के जैसे कागज बिछाया गया। इस तरह वकील साहब के बैठने के लिए नूरे ने इंतजाम किया। वकील को उस आसन पर बैठाया गया। ऐसा लग रहा था कि जैसे राजा भोज अपने सिंहासन पर बैठे हैं। नूरे ने सोचा कि अदालतों में तो बिजली के पंखे लगे होते हैं। घास की टाट्टियाँ भी रहती हैं। यहाँ भी इनके लिए हवा का इंतजाम किया जाए नहीं तो कानून की गरमी दिमाग में चढ़ जाएगी। तुरंत ही बाँस के एक पंखे को लाया गया। उस पंखे से नूरे मियाँ वकील साहब को हवा करने लगा। पंखा करते समय पंखे की चोट लगी कि पंखे की हवा से वकील साहब अपने सिंहासन से गिर पड़े। जमीन पर गिरते ही वकील साहब का नश्वर चोला बिखरकर गिर गया। मिट्टी से बने वकील का चोला मिट्टी में ही मिल गया। नूरेमियाँ और घर के बच्चों ने बहुत दुःख मनाया। बिखरे हुए चोले को लेकर घूरे पर फेंक दिया गया। इस तरह नूरेमियाँ के खिलौने वकील साहब का अंत हो गया।

नोट : विशेष

1. गद्यांश में बच्चों का खिलौनों के लिए अपनापन और आत्मीयता को दर्शाया गया है।
2. प्रेमचन्द ने बच्चे के मासूम मन की भावनाओं को कुशलता से बताया है।
3. वर्णनात्मक व व्यंगात्मक शैली का उपयोग हुआ है।

अथवा

16. एक उपवन को प्राप्त करके ईश्वर को धन्यवाद देते हुए उसका सुख नहीं लेना और इस चिंता में डूबे रहना कि इससे भी बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला। यह एक ऐसी कमी है, जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन–रात सोचते हुए वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपने विकास के लिए उद्यम करना छोड़कर वह दूसरों को कष्ट पहुँचाने को ही अपना सर्वश्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

उत्तर :

संदर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश पाठ्य–पुस्तक में वर्णित निबन्ध **ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से** पाठ से लिया गया है, इसके लेखक श्री रामधारी सिंह दिनकर हैं। ईर्ष्या का बीज इस भावना से उत्पन्न होता है कि मेरे पास इसकी कमी है, मेरे पास यह सामग्री नहीं है। ईर्ष्यालु इस बात से संतुष्ट नहीं होता है कि उसके पास जो है, वही सब कुछ है।

व्याख्या :

ईर्ष्या एक ऐसी भावना है। वह जिसके हृदय में आसन जमा लेती है, उसका संतोष कूच कर जाता है। अंजाम यह होता है कि उसे भगवान द्वारा प्रदत्त कोई भी उपहार, सुख प्रदान नहीं कर सकता और वह समस्त उपलब्धियों को छोटा मान लेता है, क्योंकि उसके मन में बसी द्वेष उस वस्तु के महत्व को ही कम कर देती है। उसकी स्थिति बड़ी अजीब हो उठती है। उसे जो उपवनरूपी सुख मिला है, उसके लिए भगवान को धन्यवाद देते हुए उसका आनन्द नहीं उठाता बल्कि रात–दिन इसी चिंता में डूबा रहता है कि उसे उससे अधिक सुख–सुविधाएँ क्यों नहीं मिली, जिन्हें दूसरे लोग भोग रहे हैं। यह एक ऐसा दोष है, जिसके परिणामस्वरूप उसका चरित्र दिन–प्रतिदिन अधिक से अधिकतर कठिन होता चला जाता है, साथ ही भयंकर हो उठता है। वह अपने मन से संकुचित और सीमित क्षेत्र में सिमटकर अनुभव करता है वह अपने उस कल्पित अभाव से मुक्ति पाने के लिए रात–दिन चिंता में डूबा रहता है। वह यह भूल जाता है कि केवल सोचने से कमी दूर नहीं हो सकती, उसके लिए कर्म चेतना जरूरी है, वह कर्म चेतना का वरण न करके बर्बादी की ओर बढ़ता चला जाता है। वह ईर्ष्यावश अपनी अकर्मण्यता का भार दूसरों पर डाल देता है और उनके बुराई की कामना में लग जाता है। अकारण उन्हें नुकसान पहुँचाने को ही वह अपना श्रेष्ठ कर्तव्य मान लेता है।

नोट : विशेष

1. यहाँ ईर्ष्यालु व्यक्ति की मनोविकार का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया गया है।
2. लेखक कर्म को मानता है, सृष्टि का प्रधान रहस्य, प्रसाद ने कामायनी में कहा है–
   कर्म का भोग, भोग का कर्म यही जड़ चेतन का आनंद।
   तुलसीदास की भी यही मान्यता है–
   कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा।
1. चिंता में डूबे रहने से और केवल इच्छा करने से संसार में कुछ भी नहीं मिलता।
2. ईर्ष्या व्यक्ति को आलसी बनाकर उसके चरित्र को अपूर्ण बना देती है।

17. पहली कियां उपाव, दव दुसमण आमय दटै।

पचंड हुआं विस वाव, रोभा घालै राजिया।

उपर्युक्त सोरठे का भावार्थ लिखिए। (उत्तर सीमा 200 शब्द) **(6)**

उत्तर :

संसार में कुछ वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनका आरंभ में तिरस्कार किए जाने पर घातक परिणाम होते हैं। दव अर्थात् आग, शत्रु और रोग पर ये तीनों आरंभ में ही हमारा ध्यान चाहते हैं। यदि कहीं थोड़ी सी भी आग लगे तो जल्दी उसे बुझा देने का प्रयास करना चाहिए। अवज्ञा करने पर वह भीषण रूप धारण कर सकती है और तब उस पर नियंत्रण पाने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ेगा और जन–धन की बहुत हानि होगी। इसी प्रकार शत्रु और रोग की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, उनका जल्दी ही उपाय करना चाहिए नहीं तो ये गंभीर हानि पहुँचा सकते हैं। उक्त सोरठे का यही आशय है कि आग, शत्रु और रोग को आरंभ में ही नियंत्रित

कर लेना चाहिए। कवि हमें सचेत कर रहा है कि आगामी संकटों से बचने का उपाय पहले से ही कर लेना बुद्धिमानी है। आग, शत्रु और रोग ये तीनों उपेक्षा करने पर जब शक्तिशाली हो जाते हैं, तो मनुष्य को बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। संकट को बढ़ने न देना और आरंभ में ही उसका उपाय कर लेना अच्छा रहता है। आग जब फैलती है तो जन–धन को बर्बाद करती है। शत्रु को बलवान हो जाने का अवसर देना मूर्खता का प्रमाण है। इसी प्रकार रोग का आरंभ में ही उपचार करना चाहिए, नहीं तो रोग बढ़ जाने पर वह प्राणघातक हो सकता है।

अथवा

17. **लक्ष्मण परशुराम संवाद** पाठानुसार परशुराम की क्रोधाग्नि कैसे शांत हुई? लिखिए।

उत्तर :

महाराज जनक ने अपनी पुत्री सीता के स्वयंवर में भगवान शिव के प्राचीन धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने वाले वीर के साथ सीता का विवाह किए जाने की माँग रखी। राम ने धनुष पर डोरी चढ़ाकर उसे खींचा तो धनुष बीच से टूट गया।

इसी समय सूचना प्राप्त कर मुनि परशुराम उस सभा मंडप में पहुँचे। धनुष टूटने का ज्ञात होने पर वह बहुत क्रोधित हो गए। राम ने उनका क्रोध शांत करने के लिए कहा कि धनुष को तोड़ने वाला उनका कोई सेवक ही होगा। यह सुनकर परशुराम भड़क गए। वह कहने लगे कि यह काम सेवक का नहीं शत्रु का है। धनुष तोड़ने वाला राजाओं के बीच से निकलकर अलग खड़ा हो जाए नहीं तो सभी राजा मारे जाएंगे। यह सुनकर लक्ष्मण ने कहा कि उन्होंने बचपन में बहुत धनुषियाँ तोड़ी थीं तब तो मुनि ने क्रोध नहीं किया था। इस धनुष से इतना प्रेम क्यों है? गुरु के धनुष की तुलना साधारण धनुषियों से किए जाने पर परशुराम क्रोधित हो गए। लक्ष्मण ने कहा कि धनुष तो राम के स्पर्श करते ही टूट गया। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। मुनि अनावश्यक ही इतना क्रोध कर रहे हैं।

यह सुनकर परशुराम अत्यधिक क्रोध से भर गए। उन्होंने विश्वामित्र से कहा कि वह इस मूर्ख लड़के को हमारा प्रताप और बल बताकर समझा दें। इस पर लक्ष्मण ने कहा कि शूरवीर शत्रु के सामने वीरता दिखाते हैं। कायर लोग ही व्यर्थ का प्रलाप किया करते हैं।

यह सुनते ही परशुराम ने अपना फरसा हाथ में ले लिया और बोले कि यह कड़वा बोलने वाला बालक मारने योग्य है। परशुराम की इस क्रोधाग्नि को शांत करने के लिए राम ने नेत्रों के संकेत से लक्ष्मण को चुप कराया और परशुराम की क्रोधाग्नि को शांत करने के लिए शीतल वचनों में कुछ प्रार्थना करने लगे, जिससे उनकी क्रोधाग्नि शांत हुई।

18. **वह तो बस आहुति देना ही अपना धर्म समझता है।** सागर के इस कथन का क्या अभिप्राय है? (उत्तर सीमा 200 शब्द) **(6)**

उत्तर :

सागरमल गोपा जैसलमेर राज्य को अँग्रेजों के प्रभाव से मुक्त कराकर मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए आंदोलन कर रहा है। जैसलमेर का शासक महारावल जवाहर सिंह अँग्रेजों के प्रभाव में है। वह प्रजा का उत्पीड़क तथा शोषक है। उसके सेवक भी उसके आदेश पर प्रजा को परेशान करते हैं। सागरमल इन बातों से भारत की स्वाधीनता के नेता जवाहरलाल नेहरू, जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री तथा रेजीडेंट एलिंगटन आदि को अवगत कराने के लिए पत्र लिखता है। वह प्रजा को अत्याचार तथा शोषण का विरोध करने के लिए प्रेरित करता है। राजा की निरंकुश, अत्याचारी, स्वेच्छाचारी, सामंतशाही के विरुद्ध उसका आंदोलन देखकर क्रोधित सत्ताधारी उसको बन्दी बनाकर तरह–तरह की यातनायें देते हैं। जेल के अंदर यातनाएँ सहते हुए सागरमल गोपा को अपने धर्म का पालन करने के लिए कहा तो उसके उत्तर में सागरमल ने कहा–स्वतंत्रता प्राप्ति के इस संघर्षरूपी यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देना ही उसका धर्म है। इस कार्य को ही वह अपना वास्तविक धर्म समझता है। अंत में जेल में ही सागरमल को 3 अप्रैल 1946 को जिंदा जला दिया जाता है। इस प्रकार स्वतंत्रता संग्रामरूपी यज्ञ में वह अपने जीवन की आहुति दे देता है।

अथवा

18. लोकसंत पीपा ने निर्गुण भक्ति काव्यधारा में किस प्रकार योगदान दिया है? लिखिए।

उत्तर :

लोकसंत पीपा राजस्थान के एक राजवंश में पैदा हुए थे। वह युवावस्था में ही गागरौन के राजा बन गये थे और एक बुद्धिमान तथा प्रजाप्रिय शासक थे। वह मूर्तिपूजक तथा देवी दुर्गा के भक्त थे। स्वामी रामानन्द का शिष्यत्व ग्रहण करने के पश्चात् पीपा निर्गुण, निराकार परम ब्रह्म की पूजा करने लगे। उन्होंने राज्य–वैभव त्याग दिया और वैराग्य धारण कर लिया।

संत पीपा मानते थे कि सभी प्राणी परमात्मा की संतान हैं। परमात्मा अपनी संतान में पक्षपात नहीं करता। उनकी दृष्टि में सभी मनुष्य समान थे। उनकी दृष्टि में ब्राह्मण तथा शूद्र में कोई ऊँचा अथवा नीचा नहीं था। संत पीपा के मन में भक्ति की भावना थी। वह भक्त के साथ एक समाज सुधारक भी थे। वह भक्ति के माध्यम से समाज के उपेक्षित वर्ग में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, दृढ़ निश्चय तथा साहस की भावना उत्पन्न करते थे। वह समाज में फैली रूढ़ियों को तोड़ने की चेतना जगाते थे। अपनी कर्मनिष्ठा और भक्ति के कारण वह आज भी जनवाणी तथा लोकगीतों का विषय बने हुए हैं।

इस प्रकार लोकसंत पीपा ने निर्गुण भक्ति को अपनी काव्य धारा में स्थान देकर प्रसारित किया।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 40 से 50 शब्दों में दीजिए :

19. गोपियाँ किस लालच से कृष्ण की दासी बन गईं? **(2)**

उत्तर :

कृष्ण ने अपने चंचल नयन रूपी मन से देखकर गोपियों के मन को वश में कर लिया। वे श्रीकृष्ण के मनमोहक हृदय को देखते रहने के लालच में उनके चरणों की दासियाँ बन गईं।

20. **कल और आज** कविता में नागार्जुन ने ऋतु चक्र का सजीव वर्णन किस प्रकार किया है? **(2)**

उत्तर :

कल और आज कविता में कवि द्वारा ग्रीष्म के तीव्र ताप से तपती हुई धरती, आकाश और जीव जगत का सजीव और स्वाभाविक वर्णन किया गया है। इसके पश्चात वर्षा ऋतु के आगमन से सारे परिदृश्य के बदल

जाने का भी शब्द–चित्र प्रस्तुत किया है। इस प्रकार ऋतु चक्र का बहुत सजीव प्रस्तुतीकरण है।

21. **कन्यादान** कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए। **(2)**

उत्तर :

कन्यदान कविता भारतीय नारी के जीवन पर केन्द्रित है। कवि परंपराओं में बंधी हुई भारतीय नारी को जाग्रत करना चाहता है। कविता का संदेश है कि स्त्री को स्त्री होने पर गर्व होना चाहिए। उसे सभी प्रकार की दीन–हीन भावना से स्वतंत्र रहना चाहिए।

22. **एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न** निबंध की भाषा–शैली पर अपने विचार लिखिए। **(2)**

उत्तर :

एक अद्भुत अपूर्व स्वप्न निबंध की भाषा सरल और सुबोध है। इस निबंध में भारतेन्दु ने तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है। मुहावरों और लोकोक्तियों ने भाषा को प्रभावशाली बना दिया है। भारतेन्दु जी ने तत्कालीन समस्त को इस निबंध में हास्य व्यंग्यपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया है। पाखण्ड, स्वार्थपरता, शिक्षा क्षेत्र तथा अंग्रेजी शासन पद्धति पर कटाक्ष किया है।

23. **गौरा** की मृत्यु का क्या कारण था? **(2)**

उत्तर : (पाठ्यक्रम में नहीं है)

24. हामिद ने चिमटा खरीदने का ही निर्णय क्यों किया? **(2)**

उत्तर :

ईद के मेले से हामिद ने तीन पैसों में लोहे का चिमटा खरीदा, क्योंकि उसे पता था उसकी दादी के पास चिमटा नहीं था। जब वह तवे पर रोटियाँ बनाती थी तो उसके हाथ की उँगलियाँ जल जाती थीं, यही वजह है कि हामिद ने दादी के लिए चिमटा खरीदा।

प्रश्न संख्या 25 से 28 का उत्तर एक पंक्ति में दीजिए :

25. **दामिनी दमक, सुर चाप की चमक, स्याम**

सेनापति की उक्ति पंक्तियों में किस ऋतु का वर्णन है? **(1)**

उत्तर : उक्त पंक्तियों में वर्षा ऋतु का वर्णन किया गया है।

26. **मातृ–वन्दना** कविता में कवि ने अपने श्रम का श्रेय किसे दिया है? **(1)**

उत्तर :

कविता में कवि ने अपने श्रम का पूरा श्रेय भारत माँ के चरणों में समर्पित किया है।

27. आध्यात्मिक दृष्टि से कन्याकुमारी का क्या महत्व है? **(1)**

उत्तर :

सर्वप्रथम कन्याकुमारी सूर्योदय और सूर्यास्त के दर्शन कराने वाली भूमि है। वहाँ वह चट्टान भी है जहाँ विवेकानंद ने समाधि लगाई थी।

28. परनिन्दा के विषय में दादू ने क्या कहा है? **(1)**

उत्तर :

दादू ने अपने शिष्यों को परनिंदा से दूर रहने को कहा है। उनके अनुसार जिस व्यक्ति के हृदय में राम नहीं बसते वहीं दूसरों की निंदा किया करता हैं।

29. निम्न रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय दिजिए : **(4)**

1. तुलसीदास 2. मुंशी प्रेमचंद

उत्तर :

1. **महाकवि तुलसीदास –** तुलसीदास का जन्म संवत् 1589 (सन् 1532) में बाँदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ। इनके पिताजी का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी था। यह **सरयूपारीण** ब्राह्मण थे। अशुभ नक्षत्र में जन्म होने और इनके स्वरूप की विचित्रता के कारण इनके माता–पिता ने इनको त्याग दिया। इनका पालन–पोषण मुनिया नाम की सेविका ने किया। इनके गुरु महात्मा नरहरिदास माने जाते हैं। इनका विवाह रत्नावली नामक गुणवती स्त्री से हुआ, लेकिन वैवाहिक जीवन अधिक नहीं चल पाया। तुलसीदास जी ने अपने विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ रामचरितमानस की रचना अयोध्या में प्रारंभ की किन्तु बाद में यह काशी के निवासी हो गए। **श्रावन** मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी संवत् 1680 (सन् 1623) को इनका स्वर्गवास हो गया।
2. **प्रेमचंद –** मुंशी प्रेमचंद का मूल नाम धनपत राय था। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के **लमही** नामक गाँव में सन् 1864 ई. में हुआ था। इनके पिता मुंशी अजायब लाल तथा माता आनन्दी देवी थीं। प्रेमचन्द उर्दू में नवाबराय के नाम से रचना करते थे। इनका विवाह विधवा शिवरानी से हुआ था। इनकी रचना पर अंग्रेजों द्वारा सोजे वतन पर प्रतिबंध लगा देने के बाद इन्होंने प्रेमचंद नाम से रचनाएँ कीं। माधुरी, हंस, मर्यादा, जागरण आदि पत्रिकाओं का संपादन किया। निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, गोदान, गबन इनके प्रमुख उपन्यास हैं।

   प्रेमचंद अध्यापक तथा डिप्टी इंस्पेक्टर रहे। महात्मा गाँधी से प्रभावित होकर प्रेमचंद ने नौकरी छोड़ दी। प्रेमचंद साहित्य–रचना और सम्पादन का कार्य करने लगे। सन् 1936 में इनका निधन हो गया।

30. निम्नांकित यातायात संकेतों का क्या अर्थ है? **(4)**

(1) 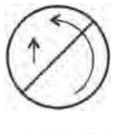

(2) 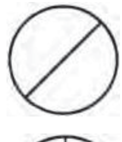

(3) 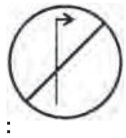

(4) 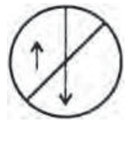

उत्तर :

1. ओवर टेकिंग पर प्रतिबंध है।
2. प्रतिबंध समाप्त होता है।
3. दाहिने मोड़ पर प्रतिबंध है।
4. एक ही रास्ता है।